VI राज्य सरकारों के व्यय: रुझान और संरचना

इस विषयगत अध्याय में राज्य सरकारों के 1980-81 से 2009-10 की अवधि के व्यय का विश्लेषण किया गया है। इसमें राज्यों में प्रति व्यक्ति के आधार पर व्यय के प्रमुख वर्गों में अंतर की समीक्षा का भी प्रयास किया गया है। कुल व्यय की संरचना से पता चलता है कि 1980 के दशक और 1990 के दशक के दौरान राजस्व व्यय में लगातार वृद्धि हुई है। किंतु, 2000 के दशक की शुरुआत से इसके हिस्से में कुछ गिरावट आई है जिसका मुख्य कारण विकास राजस्व व्यय में कमी आना है। प्रतिबद्ध व्यय-जीडीपी अनुपात में लगातार वृद्धि की प्रवृत्ति रुक कर इसमें 2005-10 के दौरान गिरावट आई जिसका मुख्य कारण ब्याज भुगतान-जीडीपी अनुपात कमी आना है। व्यय की गुणवत्ता पर राज्यों के जोर को दर्शाते हुए, पूंजी परिव्यय-जीडीपी अनुपात 2000-01 से लगातार बढ़ रहा है। 2004-05 तक की गिरावट की प्रवृत्ति से बदल कर, कुल व्यय में विकास व्यय का औसत हिस्सा 2005-10 के दौरान काफी बढ़ गया। राज्यवार विश्लेषण से पता चलता है कि व्यय की प्रमुख श्रेणियों में प्रवृत्ति में राज्यों में भिन्नता है। विश्लेषण से यह भी पता चलता है कि प्रति व्यक्ति के संदर्भ में, पूंजी परिव्यय, विकास व्यय और सामाजिक क्षेत्र के व्यय के स्तर में राज्यों में अंतर है।

1. परिचय

6.1 भारत में संघीय प्रणाली के तहत, आर्थिक और सामाजिक बुनियादी सुविधांओं के प्रावधान के सदर्भ में राज्य सरकारों पर बड़ी जिम्मेदारी है[12]। केंद्र और राज्यों के संयुक्त व्यय में राज्य सरकारों का हिस्सा लगभग 60 प्रतिशत होता है जो अर्थव्यवस्था में वृद्धि और विकास में राज्य सरकारों की महत्वपूर्ण भूमिका दर्शाता है। निम्नलिखित चर्चा में, राज्य सरकारों द्वारा किए जाने वाले व्यय की विभिन्न श्रेणियों की प्रवृत्तियों की जांच की गई है। राज्यों के व्यय के पैटर्न का अंतर-भौतिक विश्लेषण न केवल राज्य सरकारों के बदलते नीतिगत जोर के महत्व को दर्शाता है, बल्कि यह आकलन करने में मदद भी करता है कि क्या व्यय आबंटन के मामले में राज्यों में कोई परिवर्तन हो रहा है। वर्तमान अध्ययन में एक विशेष विषय के रूप में, राज्यों के व्यय की प्रवृत्ति और पैटर्न का विश्लेषण इस अध्याय में प्रस्तुत किया गया है। इस विषय में राज्य सरकारों के व्यय को फोकस किया गया है और इसमें 1980-81 से 2009-10 की अवधि कवर की गई है। यह विश्लेषण निम्नलिखित खंडों में संरचित है। खंड I में राज्य सरकारों के कुल व्यय की समग्र प्रवृत्ति दी गई है जिसके बाद खंड II और III में क्रमश: राजस्व व्यय और पूंजीगत व्यय की संरचना पर चर्चा की गई है। राज्य सरकारों के विकास व्यय और गैर-विकास व्यय की चर्चा खंड IV में की गई है। खंड V राज्य सरकारों के सामाजिक क्षेत्र के व्यय की प्रमुख श्रेणियों की जानकारी देता है। व्यय की प्रमुख श्रेणियों की राज्य-वार प्रवृत्ति खंड VI में दी गई है। खंड VII में, इस बात की जांच करने का प्रयास किया गया है कि क्या व्यय की प्रमुख श्रेणियों प्रति व्यक्ति के संदर्भ में राज्यों में कोई अंतर है।

6.2 वृद्धि, विकास, समानता और स्थिरता के लक्ष्यों को प्राप्त करने में सार्वजनिक व्यय महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। भारत जैसे विकासशील देशों के संदर्भ में, संसाधनों का समान वितरण सुनिश्चित करने में सार्वजनिक व्यय का स्थान महत्वपूर्ण है। सार्वजनिक व्यय के माध्यम से हासिल की जाने वाली अधिक समानता के पक्ष में राज्यों के पुनर्वितरण-अधिकार प्रामाणिक तर्क से उत्पन्न होते हैं। सार्वजनिक व्यय के स्तर

[12] संघीय सूची में 97 विषय (अर्थात रक्षा,अणु ऊर्जा, रेलवे और दूरसंचार तथा बीमा) हैं। राज्य सूची में 66 विषय (अर्थात, पुलिस, स्थानीय सरकार, सार्वजनिक स्वास्थ्य और कृषि आय पर कर) आते हैं। सामान्य या समवर्ती सूची में 47 विषय (अर्थात, शिक्षा, जंगल, जन्म और मृत्यु के पंजीयन सहित जन्म-मृत्यू के आंकड़े और आर्थिक और सामाजिक योजना) आते हैं। गैर-विनिर्दिष्ट या शेष अधिकार केंद्र सरकार के पास हैं। इन सूचियों में कोई भी परिवर्तन संविधान में संशोधन करके ही किया जा सकता है।

और संरचना का समष्टि आर्थिक और सामाजिक प्रभाव हो सकता है। नीति निर्माताओं और कुछ शोधकर्ताओं का तर्क है कि वृद्धि को बढ़ाने वाले कार्यों पर व्यय भविष्य में राजस्व को बढ़ा सकता है और बजट में ''राजकोषीय स्थान'' के प्रावधान को जायज सिद्ध कर सकता है। किंतु, सार्वजनिक व्यय की वृद्धि को बढ़ाने वाली संरचना की पहचान के मार्ग सरल नहीं हैं (सेमलर एट अल, 2007)[13]। अनुभवजन्य साक्ष्य को देखते हुए कि सार्वजनिक व्यय और विकास के बीच की कड़ी व्यय की प्रकृति पर निर्भर होती है, सार्वजनिक व्यय की प्रवृत्तियां और संरचना का आकलन महत्वपूर्ण हो जाता है।

2. समग्र रुझान

6.3 रुझान के विश्लेषण से पता चलता है कि जीडीपी के प्रतिशत के रूप में राज्य सरकारों का कुल व्यय 1980 के दशक के दौरान बढ़ा और 1990 के दशक के दौरान कम हुआ। जीडीपी के प्रतिशत के रूप में कुल व्यय 2000-2005 के दौरान बढ़ा। किंतु, राज्य सरकारों के समेकित व्यय में 2005-10 के दौरान गिरावट देखी जा सकती है जिसका मुख्य कारण राजकोषीय दायित्व विधान (एफआरएल) की अवधि के दौरान राजस्व व्यय का कुछ युक्तिकरण था। यह बात इससे सिद्ध हो जाती है कि 2000-05 का 13.3 प्रतिशत आरई-जीडीपी अनुपात 2005-10 में कम होकर 12.4 प्रतिशत रह गया (सारणी VI.1 और चार्ट VI.1)।

6.4 व्यय नीति के संदर्भ में, व्यय का स्तर ही नहीं बल्कि उसकी संरचना भी मायने रखती है। व्यय-स्तर विरूपण की मात्रा को दर्शाता है, जबकि इसकी संरचना व्यय नीति की प्रभावशीलता की दृष्टि से महत्वपूर्ण है (कास्टल, 2005)। मोटे तौर पर, सरकार का पूरा व्यय, जिसके द्वारा भौतिक या वित्तीय आस्तियों का निर्माण नहीं होता, राजस्व व्यय माना जाता है। जहां तक राज्य सरकारों के कुल व्यय की व्यापक संरचना का संबंध है, राजस्व व्यय में 1980 के दशक और 1990 के दशक के दौरान स्थिर वृद्धि देखी गई। 2000 के दशक की शुरुआत से, कुल व्यय में राजस्व व्यय के हिस्से में कुछ गिरावट आई है। कुल व्यय में पूंजीगत व्यय का हिस्सा 1995-00 के 16.8 प्रतिशत से बढ़कर 2000-05 में 21.2 प्रतिशत हो जाने से इस

सारणी VI.1: राज्य सरकारों के व्यय का रुझान

(जीडीपी का प्रतिशत)

अवधि	राजस्व व्यय	पूंजी व्यय	*जिसमें से:* पूंजी परिव्यय	कुल व्यय
1	2	3	4	5
1980-85	10.6	4.5	2.0	15.1
1985-90	12.2	3.9	1.8	16.1
1990-95	12.7	3.2	1.5	15.9
1995-2000	12.4	2.5	1.4	14.9
2000-05	13.3	3.6	1.6	17.0
2005-10	12.4	3.5	2.4	15.9
सीएआरजी	14.9	12.4	14.4	14.2

सीएआरजी: विकास की मिश्रित वार्षिक दर।
स्रोत: राज्य सरकारों के बजट दस्तावेज़।

अवधि के दौरान पूंजीगत परिव्यय में 0.2 प्रतिशत अंकों की वृद्धि हुई थी (सारणी VI.2 और चार्ट VI.2)। किंतु, कुल व्यय में पूंजीगत परिव्यय का हिस्सा 2000-05 के 9.6 प्रतिशत से बढ़कर 2005-10 में 15.4 प्रतिशत हो गया। फिर भी, राज्य सरकारों के व्यय का पैटर्न राजस्व व्यय का महत्व लगातार बने रहना दर्शाता है जिसमें उनकी दीर्घावधि वृद्धि की संभावना भी दिखती है क्योंकि आमतौर पर उन्हें पूंजीगत व्यय के विपरीत राज्य सरकारों के उपभोग व्यय

चार्ट VI.1: राज्य सरकारों के कुल व्यय का रुझान

[13] सेमलर, विली, एट एल. (2007), ''फिस्कल पॉलिसी, पब्लिक एक्सपेंडिचर कंपोजिशन एंड ग्रोथ थ्योरी एंड एम्पायरिक्स'', *वर्ल्ड बैंक पॉलिसी रिसर्च वर्किंग पेपर 4405.*

सारणी VI.2: राज्य सरकारों के सकल व्यय की संरचना

(करोड़ रुपए)

अवधि	राजस्व व्यय	पूंजी व्यय	जिसमें से: पूंजी परिव्यय	कुल व्यय
1	2	3	4	5
1980-85	20,855 (69.5)	9,140 (30.5)	3,943 (13.1)	29,994 (100.0)
1985-90	45,672 (76.0)	14,405 (24.0)	6,694 (11.1)	60,077 (100.0)
1985-90	98,009 (80.2)	24,261 (19.8)	11,907 (9.7)	1,22,270 (100.0)
1995-2000	1,93,812 (83.0)	39,625 (17.0)	21,064 (9.0)	2,33,441 (100.0)
2000-05	3,40,752 (77.9)	96,545 (22.1)	41,880 (9.6)	4,37,297 (100.0)
2005-10	6,17,788 (77.9)	1,75,709 (22.1)	1,22,397 (15.4)	7,93,498 (100.0)

नोट: 1. निरपेक्ष संदर्भ में व्यय संबंधित उप औसत-अवधि का प्रतिनिधित्व करता है।

2. कोष्ठक के आंकड़े राज्य सरकारों के कुल खर्च में राजस्व व्यय, पूंजीगत व्यय और पूंजी परिव्यय का प्रतिशत हिस्सा है।

स्रोत: राज्य सरकारों के बजट दस्तावेज़।

माना जाता है। इसके अलावा, राजस्व व्यय का बढ़ता हिस्सा व्यय के पैटर्न की संरचनात्मक कठोरता प्रदर्शित करता है जो राज्य सरकारों के व्यय प्रबंधन को कठिन बना देता है। इसके अलावा, 1980-81 से

चार्ट VI.2: राज्य सरकारों के व्यय का संयोजन

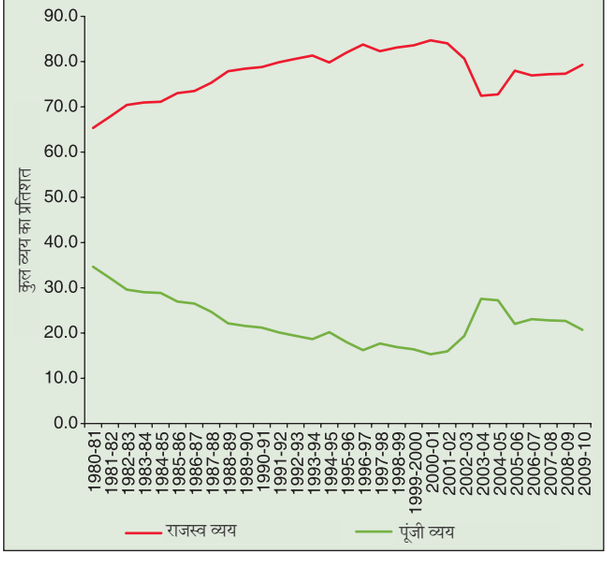

2009-10 के दौरान राजस्व व्यय में विकास की मिश्रित वार्षिक दर (सीएआरजी) पूंजीगत व्यय से अधिक पाई गई।

3. राजस्व व्यय

6.5 राजस्व और पूंजीगत व्यय के मामले में राज्य सरकारों के कुल व्यय की संरचना किए गए व्यय की गुणवत्ता प्रतिबिंबित करती है। यह परिकल्पना कि सार्वजनिक व्यय की संरचना में सुधार से विकास पर सकारात्मक असर होता है को साहित्य में व्यापक रूप से समर्थन मिला है। आम तौर पर यह पाया गया कि राजस्व वृद्धि और अधिक उत्पादक खर्च में कटौती की तुलना में चयनित राजस्व व्यय को कम करके किया गया राजकोषीय समेकन उच्च विकास दर को गति प्रदान करता है (पंग तथा अन्य 2007)[14]। इस प्रकार, इस बात की जांच करना महत्वपूर्ण है कि क्या राजस्व व्यय की प्रवृत्ति और संरचना में कोई परिवर्तन आया है। जहां तक राजस्व व्यय की संरचना का संबंध है, इसमें विकास व्यय की अधिकता है जिसमें मुख्य रूप से सामाजिक और आर्थिक सेवाओं पर राज्यों का व्यय शामिल है। विकास व्यय 1980-85 के दौरान राज्यों के कुल राजस्व व्यय का 71 प्रतिशत था। किंतु, कुल राजस्व व्यय में इसका हिस्सा 2000-05 तक लगातार कम होता रहा (54.7 प्रतिशत) जिसमें बाद के वर्षों में कुछ वृद्धि हुई (2005-10 के दौरान 58.0 प्रतिशत)। कुल राजस्व व्यय में गैर-विकासीय राजस्व व्यय का हिस्सा 2004-05 तक बढ़ता रहा और बाद में उसमें कुछ गिरावट आई (चार्ट VI.3)। विकास राजस्व व्यय में सामाजिक सेवाओं का वर्चस्व बना हुआ है। सामाजिक सेवाओं, जो 1980-85 के दौरान कुल विकास व्यय में 57.5 प्रतिशत थीं, के हिस्से में 1995-2000 से कुछ वृद्धि देखी गई। इसके विपरीत, आर्थिक सेवाओं के औसत हिस्से में 1985-90 और 1990-95 के दौरान कुछ वृद्धि हुई लेकिन बाद में उसमें गिरावट आई (चार्ट VI.4)।

6.6 जीडीपी के प्रतिशत के रूप में विकास राजस्व व्यय (डीआरई-जीडीपी) 1980-85 के 7.5 प्रतिशत से बढ़कर 1985-90 के दौरान 8.5 प्रतिशत हो गया जिसका कारण सामाजिक और साथ ही आर्थिक सेवाओं पर राजस्व व्यय में वृद्धि होना था। किंतु, डीआरई-जीडीपी

[14] पँग गावबो, पिंटो ब्रायन और वेस मारिया (2007): 'इंडिया रायजिंग - फास्टर ग्रोथ, लोवर इंडेटनेस', *पॉलिसी रिसर्च वर्किंग पेपर* सीरीज 4241, विश्व बैंक, वाशिंगटन।

चार्ट VI.3: राजस्व व्यय का संयोजन: गैर-विकास की तुलना में विकास

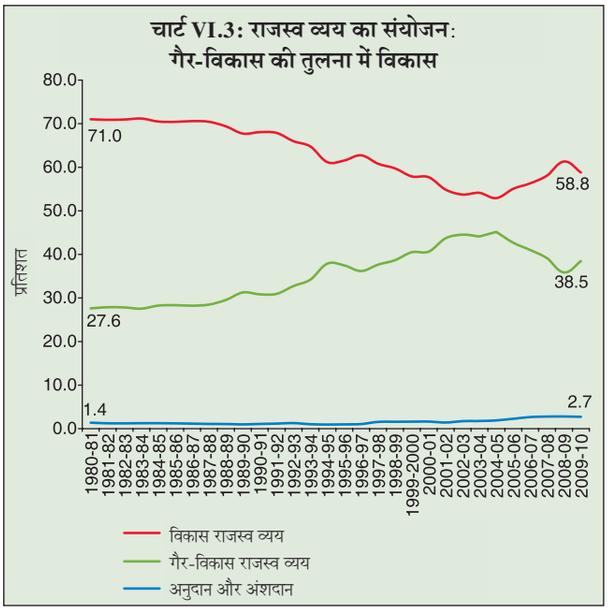

अनुपात में 1990-95 के बाद निरपेक्ष गिरावट देखी गई जिसका मुख्य कारण जीडीपी के प्रतिशत के रूप में आर्थिक सेवाओं पर राजस्व व्यय में कमी आना था। जीडीपी के प्रतिशत के रूप में सामाजिक सेवाओं पर राजस्व व्यय में भी 1985-90 के बाद कमी आई हालांकि इस कमी की गति आर्थिक सेवाओं की तुलना में कम थी। सामाजिक सेवाएं, अर्थात शिक्षा, खेल, कला और संस्कृति, चिकित्सा और सार्वजनिक स्वास्थ्य; और जलापूर्ति और स्वच्छता पर राजस्व खर्च की प्रमुख श्रेणियों में भी

चार्ट VI.4: कुल विकास राजस्व व्यय में सामाजिक और आर्थिक सेवाओं का हिस्सा

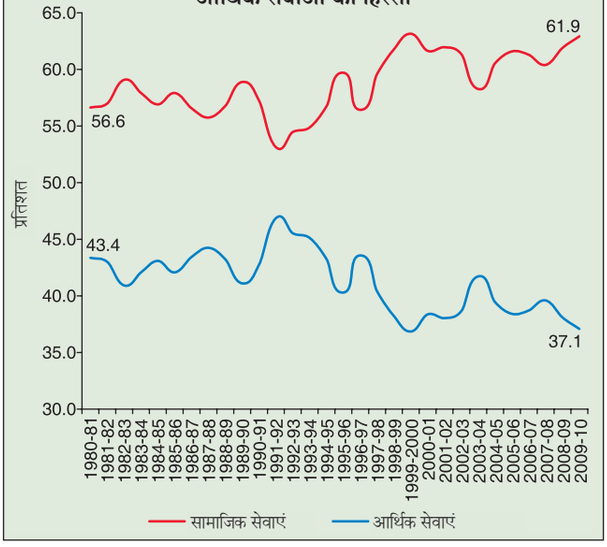

जीडीपी के संदर्भ में गिरावट देखी गई। आर्थिक सेवाओं में, कृषि और संबद्ध गतिविधियों में डीआरई-जीडीपी अनुपात में वर्षों में बड़ी गिरावट हुई। किंतु, राज्यों ने ऊर्जा क्षेत्र पर अपने राजस्व व्यय में धीरे-धीरे वृद्धि की और यह 1980-85 के 0.1 प्रतशित से बढ़कर 2000-05 में जीडीपी के 0.7 प्रतिशत हो गया (सारणी VI.3)। जीडीपी के प्रतिशत के रूप में गैर-विकासीय राजस्व व्यय (एनडीआरई-जीडीपी) में विश्लेषण की अवधि में वृद्धि की प्रवृत्ति दिखाई दी। एनडीआरई-जीडीपी अनुपात 1980-85 के 2.9 प्रतिशत से दुगुना होकर 2000-05 के दौरान 5.8 प्रतिशत हो गया और 2005-10 के दौरान थोड़ा कम होकर 4.9 प्रतिशत रह गया। सहायक अनुदान के रूप में राजस्व व्यय और स्थानीय निकायों और पंचायती राज संस्थाओं (पीआरआइ) को मुआवजा और समनुदेशन के रूप में अंशदान 1980-95 के जीडीपी के 0.1 प्रतिशत से बढ़कर 1995-2005 के दौरान 0.2 प्रतिशत हो गया और आगे और बढ़कर 2005-10 में 0.3 प्रतिशत हो गया। स्थानीय निकायों का स्वयं के कुल राजस्व, जो कि 73 वें और 74 वें संविधान संशोधन के बाद व्यय दायित्व से सौंपा गया था, में कोई विशेष सुधार न होने के कारण स्थानीय निकायों के प्रति राज्य सरकारों का वित्तपोषण बढ़ता ही जा रहा है।

6.7 ब्याज भुगतान, प्रशासनिक सेवाएं और पेंशन गैर-विकासीय राजस्व व्यय का प्रमुख भाग हैं। इस तरह का व्यय प्रतिबद्ध प्रकृति का होता है और सरकार के संसाधनों पर इसका पहला दावा होता है। इस प्रकार, इस तरह के व्यय से राज्य सरकारों की व्यय प्रबंधन प्रक्रिया कम लचीली हो जाती है। जीडीपी के प्रतिशत के रूप में प्रतिबद्ध व्यय 1980-85 के 2.3 प्रतिशत से काफी बढ़कर 2000-05 के दौरान 5.0 प्रतिशत हो गया। इसका मुख्य कारण राज्य सरकारों द्वारा अपने बकाया ऋणों, जिनमें मुख्य रूप से केन्द्र से ऋण, आंतरिक ऋण, अल्प बचत और भविष्य निधि शामिल थे, की चुकौती में तेज वृद्धि था। 1980-85 और 2000-05 के बीच, प्रतिबद्ध व्यय में लगभग 66 प्रतिशत की कुल वृद्धि का कारण ब्याज भुगतान में वृद्धि कहा जा सकता है। बढ़ते राजकोषीय असंतुलन, विशेष रूप से 1986-87 से 1997-98 के दौरान, के बीच चालू व्यय के वित्तपोषण के लिए उच्च लागत के उधार के कारण ऋण शोधन का भार बढ़ गया। वास्तव में, बढ़ते राजकोषीय अंतर का स्वयं पर ही परिणाम हुआ क्योंकि राज्यों की राजस्व प्राप्तियों के प्रति ब्याज भुगतान के अनुपात की स्थिति भी 1990 के दशक के दौरान तेजी

सारणी VI.3: राजस्व व्यय की संरचना

(जीडीपी का प्रतिशत)

मद	1980-85	1985-90	1990-95	1995-2000	2000-05	2005-10
1	2	3	4	5	6	7
I. विकास व्यय	**7.5**	**8.5**	**8.3**	**7.5**	**7.3**	**7.2**
क. सामाजिक सेवा	4.3	4.9	4.6	4.5	4.4	4.4
जिसमें से:						
1. शिक्षा, खेल, कला और संस्कृति	2.2	2.6	2.6	2.5	2.5	2.2
2. चिकित्सा और सार्वजनिक स्वास्थ्य	1.0	0.8	0.8	0.6	0.5	0.5
3. परिवार कल्याण	–	–	–	0.1	0.1	0.1
4. जलापूर्ति और स्वच्छता	–	0.3	0.3	0.3	0.2	0.2
5. आवास	0.1	0.1	0.1	0.1	0.1	0.1
6. शहरी विकास	–	0.1	0.1	0.1	0.1	0.3
7. अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों और अन्य पिछड़े वर्गों का कल्याण	–	0.3	0.3	0.3	0.3	0.3
8. सामाजिक सुरक्षा और कल्याण	0.6	0.2	0.2	0.2	0.2	0.4
ख. आर्थिक सेवा (1 से 9)	3.2	3.6	3.7	3.0	2.9	2.8
1. कृषि और संबद्ध कार्य	1.9	1.0	1.0	0.8	0.7	0.6
2. ग्रामीण विकास	–	0.8	0.8	0.6	0.5	0.5
3. विशेष क्षेत्र के कार्यक्रम	–	0.1	0.1	0.1	–	–
4. सिंचाई और बाढ़ नियंत्रण	0.6	0.7	0.6	0.6	0.4	0.3
5. ऊर्जा	0.1	0.2	0.4	0.4	0.7	0.6
6. उद्योग और खनिज	0.2	0.2	0.2	0.1	0.1	0.1
7. परिवहन और संचार	0.4	0.4	0.4	0.3	0.3	0.3
8. विज्ञान, प्रौद्योगिकी और पर्यावरण	–	–	–	–	–	–
9. सामान्य आर्थिक सेवा	–	0.2	0.2	0.1	0.2	0.2
II. गैर-विकासीय व्यय						
सामान्य सेवाएं (1 से 6)	**2.9**	**3.6**	**4.2**	**4.7**	**5.8**	**4.9**
1. राज्य के घटक	0.1	0.1	0.1	0.1	0.1	0.1
2. राजकोषीय सेवाएं	0.4	0.3	0.3	0.3	0.4	0.2
3. ब्याज भुगतान और ऋण की चुकौती	1.0	1.4	1.8	2.1	2.8	2.2
4. प्रशासनिक सेवा	1.1	1.2	1.2	1.1	1.1	1.0
5. पेंशन	0.3	0.5	0.6	0.8	1.2	1.2
6. विविध सामान्य सेवाएं	0.1	–	0.2	0.2	0.2	0.2
III. सहायक अनुदान और अंशदान	**0.1**	**0.1**	**0.1**	**0.2**	**0.2**	**0.3**
जिसमें से:						
मुआवजा और एलबी और पंचायती राज संस्थाओं को समनुदेशन	0.1	0.1	0.1	0.2	0.2	0.3
कुल राजस्व व्यय (I+II+III)	**10.6**	**12.2**	**12.7**	**12.4**	**13.3**	**12.4**

स्रोत: राज्य सरकारों के बजट दस्तावेज।

से बिगड़ी। जीडीपी के प्रतिशत के रूप में प्रशासनिक सेवाओं पर व्यय विश्लेषण की अवधि के दौरान मोटे तौर पर स्थिर बने रहा, वहीं जीडीपी के प्रतिशत के रूप में पेंशन पर राज्य सरकारों का व्यय काफी बढ़ गया (सारणी VI.4 और चार्ट VI.5 और VI.6)। 2005-10 के दौरान, प्रतिबद्ध ब्याज भुगतान में कमी आई जिसका कारण जीडीपी-ब्याज भुगतान अनुपात में गिरावट आना था जिससे राजस्व व्यय के गैर-विकासीय घटक के साथ ही कुल जीडीपी-राजस्व व्यय अनुपात में कमी आ सकी।

सारणी VI.4: प्रतिबद्ध व्यय और उसकी संरचना

(जीडीपी का प्रतिशत)

अवधि	ब्याज भुगतान	प्रशासनिक सेवाएं	पेंशन	प्रतिबद्ध व्यय
1	2	3	4	5
1980-85	0.9	1.1	0.3	2.3
1985-90	1.3	1.2	0.5	3.0
1990-95	1.7	1.2	0.6	3.5
1995-2000	2.0	1.1	0.8	3.9
2000-05	2.7	1.1	1.2	5.0
2005-10	2.1	1.0	1.2	4.3

स्रोत: राज्य सरकारों के बजट दस्तावेज।

6.8 राष्ट्रीय अल्प बचत निधि की शुरुआत से पहले, 1998-99 तक केंद्र से ऋण राज्यों के राजकोषीय घाटे के वित्तपोषण के प्रमुख

चार्ट VI.5: राजस्व व्यय के % के रूप में प्रतिबद्ध व्यय

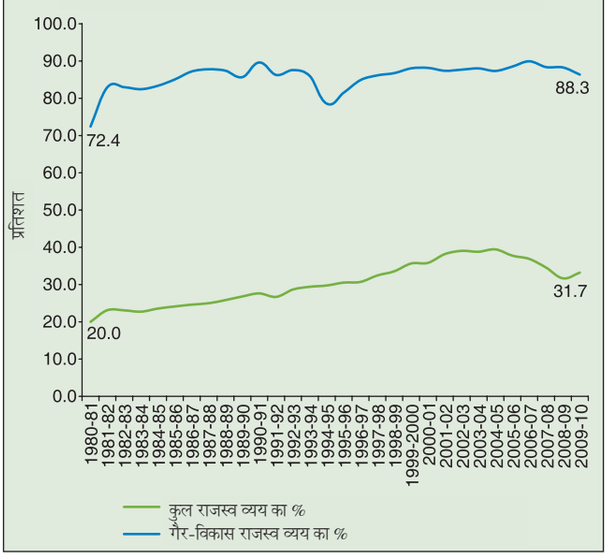

चार्ट VI.6: राज्य सरकारों के प्रतिबद्ध व्यय का रुझान और संरचना

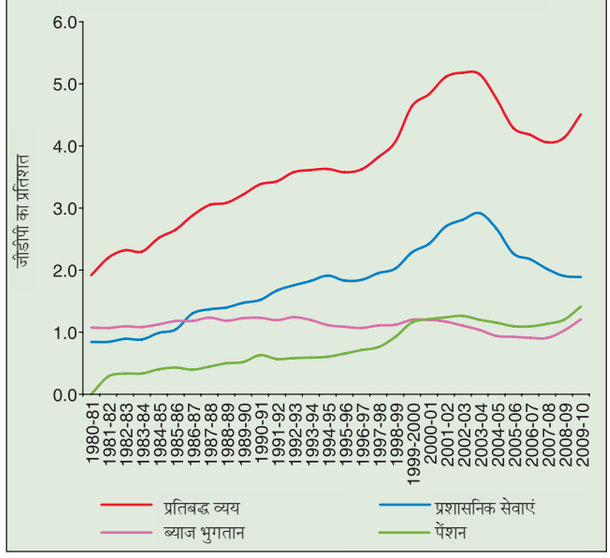

स्रोत थे। इस प्रकार, इन ऋणों पर ब्याज का भुगतान 2003-04 तक राज्यों के कुल ब्याज भुगतान का प्रमुख घटक था। उसके बाद, केंद्र से ऋण पर ब्याज भुगतान में काफी कमी आइ जिसका आंशिक कारण 2002-05 के दौरान चलाई गई ऋण स्वैप योजना (डीएसएस) और टीडब्लयूएफसी द्वारा सिफारिश की गई ऋण समेकन और राहत सुविधा (डीसीआरएफ) थी (सारणी VI.5)। इसी तरह की प्रवृत्ति राजस्व प्राप्ति के प्रतिशत के रूप में ब्याज भुगतान (आइपी-आरआर) में पाई गई। आइपी-आरआर अनुपात 1980-81 के 7.5 प्रतिशत से उत्तरोत्तर बढ़कर 2003-04 में 26.0 प्रतिशत हो गया। बाद में, आइपी-आरआर अनुपात काफी कम होकर 2008-09 के दौरान 15.1 प्रतिशत रह गया (चार्ट VI.7)। यह मोटे तौर पर टीडब्लयूएफसी द्वारा राज्यों के आइपी-आरआर अनुपात के सदर्भ में निर्धारित 15.0 प्रतिशत से नीचे के वहनीय स्तर के अनुरूप था। जीडीपी के प्रतिशत के रूप में ब्याज भुगतान में भी 2003-04 तक निरपेक्ष वृद्धि तथा उसके बाद गिरावट की प्रवृत्ति दिखाई दी (चार्ट VI.8)।

6.9 टीडब्ल्यूएफसी की सिफारिश के अनुसार राज्यों को योजना ऋण अप्रैल 2005 से बंद करने के केंद्र के निर्णय के प्रकाश में, राज्यों

सारणी VI.5: राज्य सरकारों के ब्याज भुगतान की प्रवृत्ति

(जीडीपी का प्रतिशत)

मद	1980-85	1985-90	1990-95	1995-2000	2000-05	2005-10
1	2	3	4	5	6	7
ब्याज भुगतान (i से iv)*	0.9	1.3	1.7	2.0	2.7	2.1
i) केंद्र से ऋणों पर ब्याज	0.6	0.8	1.0	1.1	1.1	0.3
ii) आंतरिक ऋण पर ब्याज	0.2	0.2	0.3	0.4	1.2	1.4
जिसमें से:						
बाजार ऋणों पर ब्याज	0.1	0.2	0.3	0.4	0.5	0.5
एनएसएसएफ पर ब्याज					0.1	0.8
iii) अल्प बचत, भविष्य निधि, आदि पर ब्याज	0.1	0.2	0.3	0.3	0.4	0.3
iv) अन्य – –	–	0.1	0.1	0.1		

– : कोई नहीं / नगण्य / लागू नहीं। * : आंकड़ों के पूर्णांकन के कारण अन्य सारणियों के आंकड़े भिन्न हो सकते हैं।

स्रोत: राज्य सरकारों के बजट दस्तावेज़।

चार्ट VI.7: ब्याज भुगतान का रुझान

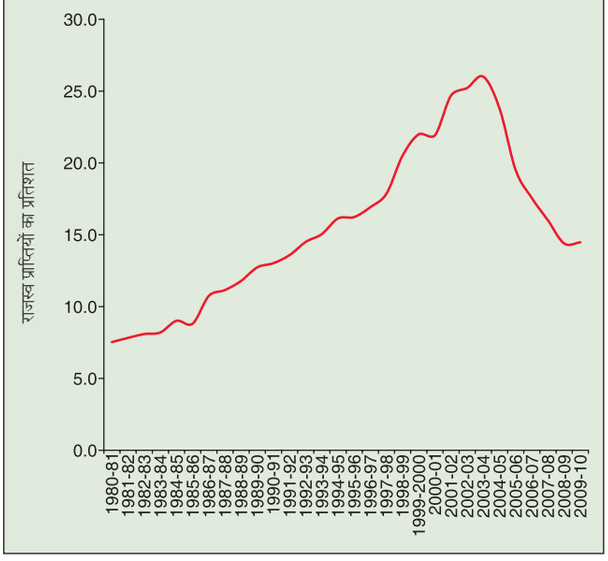

को अपनी जीएफडी के निधीयन के लिए मुख्य रूप से बाजार उधार और एनएसएसएफ द्वारा जारी की गई विशेष प्रतिभूतियों के माध्यम से संसाधन जुटाने थे। नतीजतन, बाजार उधार और एनएसएसएफ ऋण पर ब्याज भुगतान में हाल की अवधि में धीरे-धीरे वृद्धि हुई है। एनएसएसएफ ऋण की ब्याज दर राज्य के सभी उधारों में सबसे अधिक होने के कारण,

चार्ट VI.8: ब्याज भुगतान की संरचना

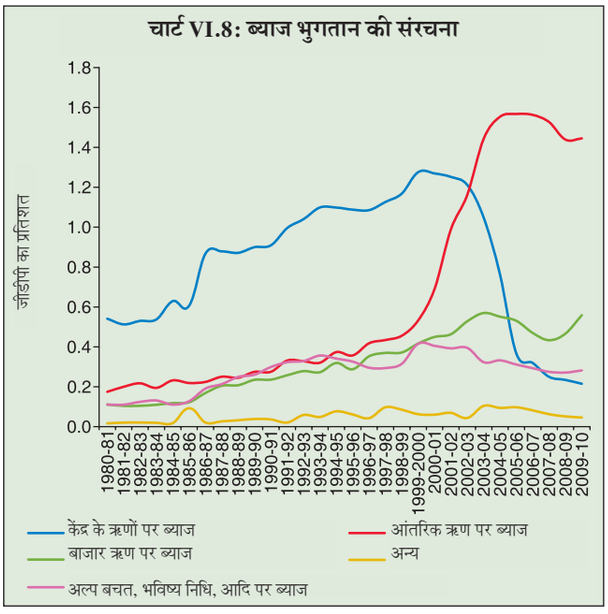

इससे ब्याज भुगतान पर भारी दबाव आता है। किंतु, जीडीपी के प्रतिशत के रूप में अल्प बचत और भविष्य निधि पर ब्याज भुगतान हाल के वर्षों में लगभग स्थिर बना हुआ है।

4. पूंजीगत व्यय

6.10 पूंजीगत व्यय बहुत महत्वपूर्ण होता है क्योंकि राजस्व व्यय की तुलना में विकास पर इसका स्थायी प्रभाव होता है। यदि कुशलता से खर्च किया जाए तो इससे अर्थव्यवस्था अधिक उत्पादक बनती है और भविष्य में जीडीपी की अधिक अपेक्षा के कारण बढ़े हुए राजस्व से सरकार की निवल मालियत में वृद्धि होती है। इसी प्रकार, सरकार के पूंजीगत व्यय के कुशल आबंटन से निजी निवेश को प्रभावित कर सकता है बशर्ते यह निजी निवेशकों के लिए उधार लेने की लागत न बढ़ाए। इस प्रकार, बुनियादी सुविधाओं के लिए पूंजी परिव्यय से निजी निवेश की उत्पादकता का स्तर बढ़ने की आशा है जिससे निजी निवेश बढ़ सकता है।

6.11 1980-2010 के दौरान, राज्यों के कुल व्यय में पूंजीगत व्यय का हिस्सा थोड़ा बढ़ा और वह भी मुख्य रूप से हाल के वर्षों में बढ़ा। जीडीपी के प्रतिशत के रूप में पूंजीगत परिव्यय[15] (सीओ-जीडीपी), जो कि राज्य सरकारों की निवेश गतिविधियों का संकेतक होता है), में 1980 के दशक के शुरू में गिरावट का रुख दिखने लगा जो विशेष रूप से 1987-88 से अधिक स्पष्ट होने लगा। इस अवधि के दौरान, राज्यों ने 1987-88 के बाद से राजस्व घाटे का सामना करते हुए अपनी निवेश गतिविधियों को घटा दिया। राज्य सरकारों द्वारा निवेश को धीमा किया गया जो राज्यों के व्यय का राजस्व व्यय की ओर अंतरण दर्शाता है जिसका मुख्य कारण ब्याज भुगतान, पेंशन और प्रशासनिक सेवाओं के कारण गैर-योजना व्यय में लगातार वृद्धि था। किंतु, हाल के वर्षों में यह प्रवृत्ति उलट गई है और व्यय का उभरता स्वरूप, विशेष रूप से 2002-03 के बाद की अवधि के दौरान, जीडीपी के प्रतिशत के रूप में पूंजीगत व्यय में तेज वृद्धि इंगित करता है। एक अंतर-कालिक तुलना से पता चलता है कि सीओ-जीडीपी अनुपात 1980-85 के 2.0 प्रतिशत से कम होकर 1985-90 के दौरान 1.8 प्रतिशत रह गया। राज्यों की वित्तीय स्थिति और खराब हो जाने से यह

[15] पूंजी परिव्यय में सामाजिक और आर्थिक सेवाओं पर पूंजी व्यय शामिल होता है।

गिरावट 1990 के दशक के दौरान अधिक गंभीर हो गई। किंतु, राज्य वित्त में समग्र सुधार हो जाने के कारण राज्य पूंजी परिव्यय में वृद्धि कर सके जैसा कि 2005-10 के दौरान 2.4 प्रतिशत सीओ-जीडीपी अनुपात से देखा जा सकता है (चार्ट VI.9)।

6.12 हाल के वर्षों में उभरी एक और उत्साहजनक प्रवृत्ति यह है कि राज्य सरकारों के कुल पूंजी व्यय में पूंजी परिव्यय की हिस्सेदारी बढ़ती जा रही है। कुल पूंजी व्यय में पूंजी परिव्यय की हिस्सेदारी 1980-81 के 44.4 प्रतिशत से बढ़कर 2009-10 के दौरान 68.6 प्रतिशत हो गई। यह उत्पादक क्षमता उत्पन्न करने अपनी विकास क्षमता बढ़ाने में राज्य सरकारों की बढ़ती भूमिका दर्शाता है। हालांकि पूंजी परिव्यय में वृद्धि ने वर्षों से अस्थिर प्रवृत्ति दर्शाई है, 1980-81 से 2009-10 के दौरान सीएआरजी राज्य सरकारों के पूंजी व्यय की तुलना में अधिक पाया गया (चार्ट VI.10)।

6.13 पूंजी परिव्यय में मुख्य रूप से सामाजिक और आर्थिक सेवाओं से संबंधित विकास गतिविधियों पर किया जाने वाला व्यय शामिल होता है। जीडीपी के प्रतिशत के रूप में विकास पूंजी व्यय (डीसीओ-जीडीपी) 1980-85 के 2.0 प्रतिशत से लगातार कम होकर 1995-2000 के दौरान 1.3 प्रतिशत रह गया। किंतु, बाद के वर्षों में राज्य सरकारों के द्वारा ग्रामीण विकास, सिंचाई गतिविधियों, ऊर्जा और परिवहन संबंधी सेवाओं पर फोकस बढ़ाने से

चार्ट VI.9: पूंजी परिव्यय का रुझान

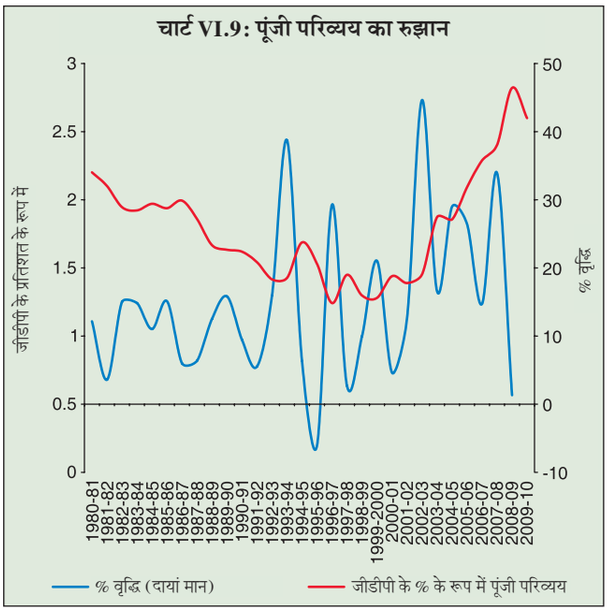

चार्ट V.6: VI.10: कुल व्यय और पूंजी व्यय में पूंजी परिव्यय का हिस्सा

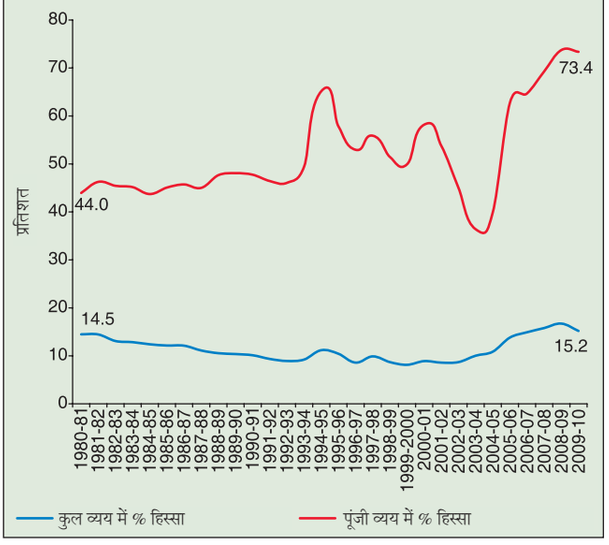

डीसीओ-जीडीपी अनुपात बढ़कर 2000-05 में 1.6 प्रतिशत और 2005-10 के दौरान 2.4 प्रतिशत हो गया। जीडीपी के प्रतिशत के रूप में आर्थिक सेवाओं पर विकास पूंजी व्यय 1995-2000 के 1.1 प्रतिशत से बढ़कर 2005-10 के दौरान 1.9 प्रतिशत हो गया। जीडीपी के प्रतिशत के रूप में परिवहन क्षेत्र पर राज्य सरकारों के विकास पूंजी व्यय में काफी वृद्धि हुई, विशेष रूप से 2000 के दशक की शुरुआत के बाद। इसी तरह, जीडीपी के प्रतिशत के रूप में ऊर्जा क्षेत्र पर विकास पूंजी व्यय का 0.15 प्रतिशत से बढ़कर 2009-10 के दौरान 0.30 प्रतिशत हो जाना राज्य सरकारों द्वारा अपनी ऊर्जा जरूरतों को पूरा करने पर के ध्यान केंद्रित करना दर्शाता है। इसके अलावा, जीडीपी के प्रतिशत के रूप में सामाजिक सेवाओं पर विकास पूंजी परिव्यय भी 1995-2000 और 2005-10 के दौरान 0.3 प्रतिशत से बढ़कर 0.5 प्रतिशत हो गया। सामाजिक सेवाओं के अंतर्गत, पूंजी परिव्यय मुख्य रूप से जल आपूर्ति और सफाई, शिक्षा, खेल, कला और संस्कृति और चिकित्सा और सार्वजनिक स्वास्थ्य के लिए आबंटित था (परिशिष्ट सारणी 22)।

6.14 केंद्र के ऋणों की चुकौती संबंधी पूंजी व्यय में विशेष रूप से 2002-03 के बाद से वृद्धि हुई। ऋण अदला-बदली योजना (2002-03 से 2004-05) के तहत राज्यों को अतिरिक्त बाजार उधार और अल्प बचत से प्राप्त आय के माध्यम से केंद्र सरकार के उच्च लागत के ऋणों की पूर्व चुकौती करनी थी। इसके विपरीत, विकास और गैर-

विकास के ऋणों और अग्रिमों के माध्यम से राज्य सरकारों के पूंजी व्यय नें विश्लेषण की अवधि के दौरान निरंतर गिरावट दिखाई। विशेष रूप से, विकास प्रयोजनों के ऋण और अग्रिम 1980-85 के जीडीपी के 1.39 प्रतिशत से कम होकर 2005-10 के दौरान 0.34 प्रतिशत रह गए।

विकास और गैर-विकास व्यय[16]

6.15 राज्य सरकारों के व्यय के विश्लेषण का एक और तरीका उन्हें 'विकास' और 'गैर-विकास' व्यय के अंतर्गत वर्गीकृत करना है। विकास व्यय का लाभदायक प्रभाव होता है और इससे आर्थिक और सामाजिक विकास होता है। दूसरी ओर, गैर-विकास व्यय में प्रशासनिक व्यय और ब्याज व्यय आता है। इस प्रकार, इस तरह के व्यय का वर्गीकरण राज्य सरकारों के व्यय के पैटर्न में आने वाले गुणात्मक बदलाव देखने के लिए महत्वपूर्ण है। चूंकि विकास व्यय आर्थिक और सामाजिक दोनों सेवाओं से संबंधित होता है, अत: उसकी प्रवृत्तियों में मोटे तौर पर देश के आर्थिक और सामाजिक विकास में राज्य सरकारों की उभरती भूमिका देखी जा सकती है।

6.16 राज्य सरकारों के कुल व्यय की संरचना से पता चलता है कि यह मुख्य रूप से विकास के प्रयोजनों के लिए व्यय किया गया था (चार्ट VI.11)। जीडीपी के प्रतिशत के रूप में विकास व्यय (डीई-जीडीपी) ने सामान्य रूप से 1987-88 और 2004-05 के दौरान गिरावट का रुख दिखाया। किंतु, डीई-जीडीपी अनुपात उसके बाद बढ़ गया। जहां जीडीपी के प्रतिशत के रूप में विकास पूंजी परिव्यय 2000-05 और 2005-10 के दौरान काफी बढ़ गया, वहीं जीडीपी के प्रतिशत के रूप में विकास राजस्व व्यय में गिरावट का रुख दिखा (सारणी VI.6 और चार्ट VI.12)।

चार्ट V.11: विकास और गैर-विकास व्यय का हिस्सा

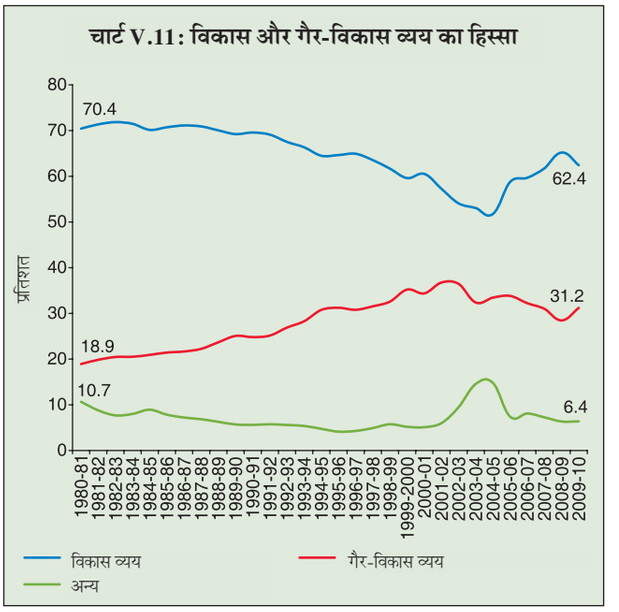

सारणी VI.6: विकास व्यय की संरचना

(जीडीपी का प्रतिशत)

मद	1980-85	1985-90	1990-95	1995-2000	2000-05	2005-10	सीएआरजी
1	2	3	4	5	6	7	8
विकास व्यय (i+ii)	10.9	11.4	10.7	9.4	9.4	9.8	13.7
जिसमें से:							
(i) राजस्व	7.5	8.5	8.3	7.5	7.3	7.2	14.2
(ii) पूंजी	3.4	2.9	2.4	1.9	2.1	2.6	12.5
गैर-विकास व्यय	3.1	3.7	4.3	4.8	5.9	5.0	16.1
अन्य	1.3	1.1	0.9	0.7	1.7	1.1	12.2
कुल	**15.3**	**16.1**	**15.9**	**14.9**	**17.0**	**15.9**	**14.2**

स्रोत: राज्य सरकारों के बजट दस्तावेज।

[16] विकास व्यय में सामाजिक सेवाएं (अर्थात् शिक्षा, खेल, कला और संस्कृति, चिकित्सा और सार्वजनिक स्वास्थ्य, परिवार कल्याण, जल आपूर्ति और स्वच्छता, आवास, शहरी विकास, अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों तथा अन्य पिछड़े वर्गों का कल्याण, सामाजिक सुरक्षा और कल्याण) और आर्थिक सेवाएं (अर्थात् कृषि और संबंधित कार्य, ग्रामीण विकास, विशेष क्षेत्र के कार्यक्रम, प्रमुख और मध्यम सिंचाई तथा बाढ़ नियंत्रण, ऊर्जा, उद्योग और खनिज, परिवकन, संचार, विज्ञान, प्रौद्योगिकी और वातावरण तथा सामान्य आर्थिक सेवाएं) शामिल हैं। गैर-विकास व्यय में राज्यों के घटक सहित सामान्य सेवाओं, राजकोषीय सेवाओं पर व्यय, ब्याज भुगतान और ऋण शोधन, प्रशासनिक सेवाएं, पेंशन और विविध सामान्य सेवाएं शामिल हैं।

चार्ट V.12: विकास और गैर-विकास व्यय (जीडीपी के % के रूप में)

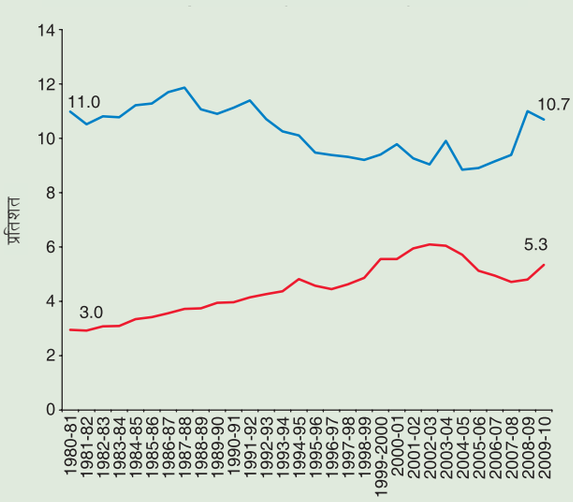

6.17 जैसा कि चार्ट VI.13 से देखा जा सकता है, राज्यों के समग्र विकास व्यय में आर्थिक सेवाओं की हिस्सेदारी 1980 के दशक और 1990 के दशक के दौरान सामाजिक सेवाओं की तुलना में अधिक थी। किंतु, उसके बाद की अवधि के दौरान, राज्यों के समग्र विकास व्यय में आर्थिक सेवाओं का औसत हिस्सा सामाजिक सेवाओं की तुलना में कम था।

चार्ट V.13: विकास व्यय में सामाजिक और आर्थिक सेवाओं का हिस्सा

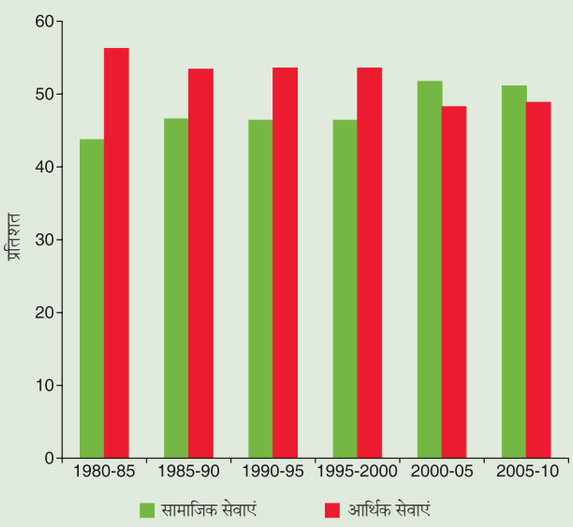

सामाजिक क्षेत्र के व्यय

6.18 सामाजिक क्षेत्र में विशेष होता है क्योंकि इसके तहत आने वाले शिक्षा, सार्वजनिक स्वास्थ्य और पानी और सफाई जैसे क्षेत्रों में लाभ मिलने में काफी समय लगता है। भारतीय संदर्भ में, राज्य सरकारों को स्वास्थ्य, शिक्षा और परिवार कल्याण जैसे सामाजिक व्यय के संबंध में संविधान (सातवीं अनुसूची, अनुच्छेद 246) में उच्च दायित्व सौंपा गया है। जहाँ तक जीडीपी के प्रतिशत के रूप में राज्य सरकारों द्वारा सामाजिक क्षेत्र में व्यय (एसएसई-जीडीपी) के लिए आबंटन का संबंध है, यह 1980 के दशक की दूसरी छमाही के दौरान तेजी से बढ़ा और 1990 के दशक के दौरान इसमें कुछ गिरावट दिखी। यह अक्सर बताया गया है कि भारत के आर्थिक सुधारों से भी पहले सामाजिक क्षेत्र के व्यय बजट में कटौती के संदर्भ में सर्वाधिक संवेदनशील थे (टीसूजिता, 2005) [17]। अनेक अध्ययनों में यह पाया गया कि 1990 के दशक के दौरान के आर्थिक सुधारों के बाद राजकोषीय घाटे को कम करने के दबाव में सामाजिक क्षेत्र के व्यय में गिरावट आई। हालांकि, 1990 के दशक के अंतिम वर्ष के दौरान एसएसई-जीडीपी अनुपात में औसत आधार पर कुछ वृद्धि हुई थी, यह 5.5 प्रतिशत रहा था जो 1990-95 की तुलना में कम था। 2000 की पहली छमाही के दौरान, एसएसई-जीडीपी अनुपात सामान्यत: 5.5 प्रतिशत पर स्थिर था। किंतु, जीडीपी के प्रतिशत के रूप में सामाजिक क्षेत्र का व्यय 2005-10 के दौरान बढ़ गया (चार्ट VI.14)।

चार्ट V.14 : सामाजिक क्षेत्र के व्यय का रुझान

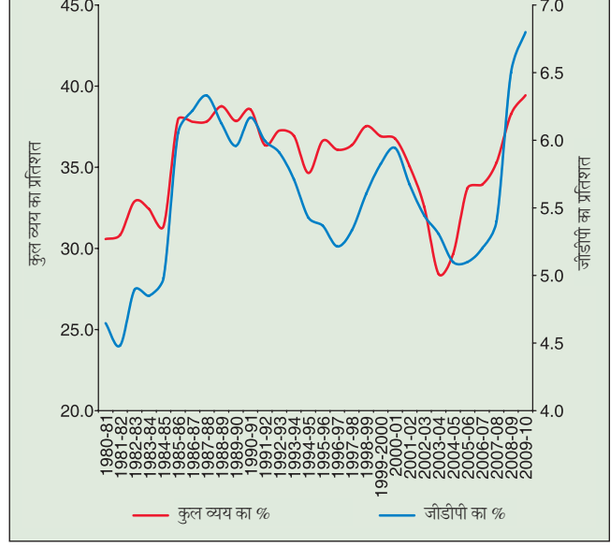

[17] टीसूजिता, यूको (2005), 'आर्थिक क्षेत्र के सुधार सामाजिक क्षेत्र का व्यय: भारत के पंद्रह राज्यों का अध्ययन 1980/81-1999/2000', चर्चा पेपर सं.31, विकासशील अर्थव्यवस्था संस्था - जापान बाह्य व्यापार संस्था, जापान।

6.19 सामाजिक क्षेत्र के व्यय का एक बड़ा हिस्सा पूंजी परिव्यय की तुलना में राजस्व व्यय के रूप में अधिक होता है। फिर भी, सामाजिक क्षेत्र के कुल व्यय में पूंजी परिव्यय की हिस्सेदारी में 2000-05 और 2005-10 के दौरान कुछ सुधार देखा गया। वर्तमान में, पूंजी परिव्यय सामाजिक क्षेत्र के कुल व्यय का लगभग 10 प्रतिशत होता है। यह इंगित करता है कि सामाजिक क्षेत्र के कुल व्यय (अर्थात, पूंजी व्यय जिसमें पूंजी परिव्यय और ऋण और अग्रिम शामिल हैं) का मात्र 10 प्रतिशत सामाजिक बुनियादी ढांचे में निवेश के लिए आबंटित किया जाता है। सामाजिक क्षेत्र को दी गई राजकोषीय प्राथमिकता (अर्थात, कुल व्यय में एसएसई अनुपात) जो 1980-85 के दौरान 31.6 प्रतिशत के आसपास था, वह 1985-90 के दौरान बढ़कर 38.0 प्रतिशत हो गया। तथापि, यह 1990 के दशक के दौरान कुछ हद तक कम हुआ और 2000 के दशक के पूर्वार्ध के दौरान इसमें भारी गिरावट आई हालांकि 2005-06 के बाद वह बढ़ने लगा।

6.20 1980 के दशक के दौरान, ग्रामीण विकास, शिक्षा, खेल, कला और संस्कृति, जल आपूर्ति और स्वच्छता और अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों और पिछड़े वर्गों के कल्याण जैसे मुख्य सामाजिक क्षेत्रों पर विशेष ध्यान दिया गया है। यद्यपि राज्यों की बिगड़ती राजकोषीय स्थिति से 1990 के दशक के दौरान एसएसई-जीडीपी अनुपात में कुछ कमी आ गई थी जिससे संसाधनों की कमी हो गई थी और सामाजिक क्षेत्र पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा था। इसके बावजूद, प्रमुख सामाजिक क्षेत्रों, अर्थात शिक्षा, खेल, कला और संस्कृति, चिकित्सा और सार्वजनिक स्वास्थ्य और ग्रामीण विकास के लिए व्यय को निरंतर अपेक्षाकृत अधिक आबंटन प्राप्त हो रहा था (परिशिष्ट सारणी 23)।

5. व्यय का राज्य-वार विश्लेषण

6.21 जीएसडीपी के प्रतिशत के रूप में राज्य सरकार के व्यय (एसजीई-जीएसडीपी अनुपात) विशेष श्रेणी के राज्यों, अर्थात सिक्किम, अरुणाचल प्रदेश, मिजोरम, मणिपुर और जम्मू और कश्मीर में काफी अधिक पाया गया। इन राज्यों की आर्थिक गतिविधियों में राज्य सरकार के व्यय की भूमिका महत्वपूर्ण है। विशेष श्रेणी के राज्यों में एसजीई-जीएसडीपी अनुपात अधिक होने का कारण केन्द्र सरकार द्वारा अन्य राज्यों की तुलना में इन राज्यों में संसाधनों का अधिक हस्तांतरण हो सकता है। किंतु, एसजीई-जीएसडीपी अनुपात महाराष्ट्र, गुजरात, हरियाणा, केरल, तमिलनाडु और पश्चिम बंगाल जैसे राज्यों में 20 प्रतिशत से कम पाया जाता है (विवरण 49)।

6.22 औसत से कम प्रति व्यक्ति आय वाले राज्यों (अर्थात सिक्किम, जम्मू और कश्मीर तथा बिहार) के मामले में, एसजीई-जीएसडीपी अनुपात 1980-85 और 2005-10 के दौरान तेजी से बढ़ा। इसके विपरीत, इसी अवधि के दौरान, तमिलनाडु, मेघालय, गुजरात, महाराष्ट्र, केरल, मणिपुर, हरियाणा और नगालैंड राज्यों के मामले में एसजीई-जीएसडीपी अनुपात कम हो गया (चार्ट VI.15)। यह इंगित करता है कि इन राज्यों की अर्थव्यवस्था का आकार (अर्थात जीएसडीपी) संबंधित राज्य सरकारों के व्यय के आकार की तुलना में अधिक तेजी से बढ़ा। किंतु, एक विश्लेषण से पता चलता है कि एसजीई-जीएसडीपी अनुपात में औसत बदलाव 1985-90 की तुलना में 2005-10 में 5 प्रतिशत पर सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण नहीं था[18]। इस तरह, सामान्य रूप से, राज्य सरकारों के आकार में विश्लेषण की अवधि में कोई खास परिवर्तन नहीं हुआ।

चार्ट V.15: राज्य सरकारों के व्यय का आकार

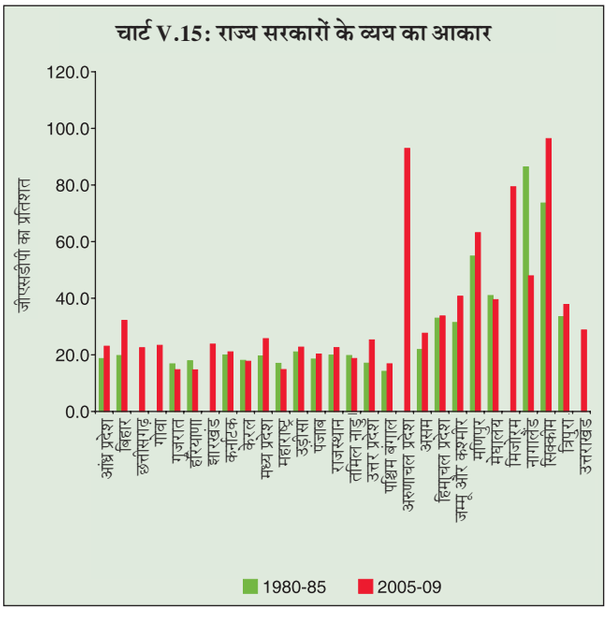

[18] माध्यम जांच के अंतर के आधार पर, अर्थात् टी=(एमटी-एमटी-1)/एसई, जहां एमटी और एमटी 1 का अर्थ क्रमश: 2005-10 और 1980-85 के दौरान राज्यों में एसजीई-जीएसडीपी औसत अनुपात है। एसई मानक चूक है।

6.23 विशेष श्रेणी के अधिकांश राज्यों ने 2005-10 के दौरान राष्ट्रीय औसत की तुलना में प्रति व्यक्ति व्यय के रूप में अधिक खर्च किया। इसके विपरीत, उच्च व्यक्ति आय वाले राज्यों, अर्थात पंजाब, हरियाणा, गुजरात, केरल और तमिलनाडु की इसी अवधि के दौरान राष्ट्रीय औसत से कम व्यय किया । राज्य-वार एसजीई-जीएसडीपी अनुपात और प्रति व्यक्ति सकल व्यय के बीच रैंक सहसंबंध 2005-10 के लिए 0.49 था जो 1 प्रतिशत पर सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण है। यह पता चलता है कि, सामान्य रूप से, उच्च एसजीई-जीएसडीपी अनुपात वाले राज्य प्रति व्यक्ति सकल व्यय के संदर्भ में भी आगे थे।

राजस्व व्यय

6.24 राज्यवार विश्लेषण दर्शाता है कि जीएसडीपी के प्रतिशत के रूप में राजस्व व्यय आम तौर पर विशेष से भिन्न श्रेणी के राज्यों की तुलना में विशेष श्रेणी के राज्यों में अधिक था। उदाहरण के लिए, 2005-10 के दौरान आरई-जीएसडीपी अनुपात 92.8 प्रतिशत पर सिक्किम में सबसे ज्यादा था जिसके बाद अरुणाचल प्रदेश (64.5 प्रतिशत) और मिजोरम (58.0 प्रतिशत) का स्थान था। इसके विपरीत, इसी अवधि के दौरान राजस्व व्यय-जीएसडीपी अनुपात सभी विशेष से भिन्न श्रेणी के राज्यों (बिहार को छोड़कर) में 20 प्रतिशत से कम था। विशेष से भिन्न श्रेणी के राज्यों, गुजरात, महाराष्ट्र और हरियाणा में 2005-10 के दौरान आरई-जीएसडीपी अनुपात सबसे कम था। एक अंतर-भौतिक तुलना से पता चलता है कि दो राज्यों, अर्थात., महाराष्ट्र और नागालैंड में 1980-85 की तुलना में 2005-10 के दौरान आरई-जीएसडीपी अनुपात में गिरावट आई। किंतु, 28 राज्यों में से 15 में 2000-05 की तुलना में 2005-10 के दौरान आरई-जीएसडीपी अनुपात में गिरावट दर्ज हुई। इससे यह पता चलता है कि एफआरएल अवधि के दौरान राज्यों में राजस्व व्यय में कुछ युक्तिकरण किया गया (विवरण 50)। विशेष से भिन्न श्रेणी के राज्यों के मामले में, आरई-जीएसडीपी अनुपात 2000-05 की तुलना में 2005-10 के दौरान कम होने के बावजूद 1980-85 की तुलना में सांख्यिकीय रूप से अब भी काफी अधिक था।

6.25 राजस्व व्यय के भीतर, बकाया ऋण की चुकौती का ब्याज भुगतान राज्य सरकारों का एक प्रमुख प्रतिबद्ध व्यय होता है। जीएसडीपी के प्रतिशत के रूप में ब्याज भुगतान 2001-05 की तुलना में 2005-10 के दौरान मध्य प्रदेश, हिमाचल प्रदेश, मिजोरम और उत्तराखंड को छोड़कर बाकी सभी राज्यों में कम हो गया। 2001-05 की तुलना में 2005-10 के दौरान हुई गिरावट महत्व के 1 प्रतिशत स्तर पर सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण थी। इसका कारण 2002-05 के दौरान परिचालित ऋण स्वैप योजना (डीएसएस) और टीडब्ल्यूएफसी द्वारा सिफारिश की गई ऋण समेकन और राहत सुविधा (डीसीआरएफ) हो सकती है जिससे ब्याज के भुगतान पर खर्च कम करने में राज्यों को मदद मिली।

पूंजी परिव्यय

6.26 यह प्रतीत होता है कि ज्यादातर राज्य सरकारें अनुत्पादक व्यय कम करने और व्यय को विकास प्रयोजनों की ओर मोड़ने की जरूरत समझ चुके हैं। जीएसडीपी के प्रतिशत के रूप में पूंजी परिव्यय (सीओ-जीएसडीपी) में 2000-05 की तुलना में 2005-10 के दौरान सभी राज्यों में वृद्धि दर्ज की गई। विशेष श्रेणी से भिन्न राज्यों, बिहार और उत्तर प्रदेश ने सीओ-जीएसडीपी अनुपात में उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की जबकि विशेष श्रेणी के राज्यों में अरुणाचल प्रदेश, मणिपुर, मिजोरम और उत्तराखंड ने तेज वृद्धि दर्ज की। 2000-05 की तुलना में 2005-10 के दौरान सभी राज्यों के सीओ-जीएसडीपी अनुपात में हुई समग्र वृद्धि सांख्यिकीय रूप से 1 प्रतिशत पर महत्वपूर्ण थी (विवरण 51)। इस विश्लेषण से उभरा एक दिलचस्प तथ्य यह है कि 1980 के दशक के दौरान विशेष श्रेणी से भिन्न राज्यों के बीच सीओ-जीएसडीपी अनुपात उड़ीसा में और अविकसित राज्यों, अर्थात बिहार, राजस्थान, मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश में उच्च था। इसके अलावा, 1990 के दशक के दौरान अधिकांश अन्य राज्यों के अनुरूप इन राज्यों के सीओ-जीएसडीपी अनुपात में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। यहां तक कि 2005-10 के दौरान भी, विशेष श्रेणी से भिन्न राज्यों में बिहार, मध्य प्रदेश, झारखंड, राजस्थान और उत्तर प्रदेश का सीओ-जीएसडीपी अनुपात अधिकतम था। किंतु, इन राज्यों का प्रति व्यक्ति पूंजी परिव्यय अन्य राज्यों की तुलना में कम था। इससे उनकी प्रति व्यक्ति आय का स्तर भी प्रभावित हो सकता है।

6.27 जहां तक राज्यों में प्रति व्यक्ति पूंजी परिव्यय की प्रवृत्ति का संबंध है, वृद्धि के संदर्भ में कुछ राज्य अन्य की तुलना में पिछड़ गए हैं। 1980-2010 के दौरान, प्रति व्यक्ति पूंजी परिव्यय में चक्रवृद्धि वार्षिक वृद्धि दर केरल, मध्य प्रदेश, उड़ीसा, अरुणाचल प्रदेश और मिजोरम में 10 प्रतिशत से कम थी। इसके विपरीत,

तमिलनाडु, महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक और असम जैसे राज्यों ने इसी अवधि के दौरान उच्चतम सीएआरजी दर्ज किया जो वृद्धि और विकास बढ़ाने के लिए बुनियादी सेवाओं के निर्माण पर उनका फोकस बढ़ना दर्शाता है। प्रति व्यक्ति पूंजी परिव्यय सामान्यत: विशेष से भिन्न श्रेणी के राज्यों की तुलना में विशेष श्रेणी के राज्यों में अधिक था (विवरण 52)। सीओ-जीएसडीपी अनुपात और प्रति व्यक्ति पूंजी परिव्यय के बीच 0.71 पर रैंक सहसंबंध 1 प्रतिशत पर सांख्यिकी रूप से महत्वपूर्ण था। इस प्रकार, यह अनुमान लगाया जा सकता है कि अधिक सीओ-जीएसडीपी अनुपात वाले सामान्य राज्यों में भी 2005-10 के दौरान प्रति व्यक्ति के संदर्भ में अधिक राशि व्यय की गई।

विकास व्यय

6.28 2000-05 की तुलना में 2005-10 के दौरान, जीएसडीपी के प्रतिशत के रूप में विकास व्यय (डीई-जीएसडीपी)में अधिकांश राज्यों में वृद्धि हुई। किंतु, कुछ राज्यों में डीई-जीएसडीपी अनुपात 1980-85 की तुलना में अब भी कम था (विवरण 53)। डीई-जीएसडीपी अनुपात विशेष से भिन्न श्रेणी के राज्यों की तुलना में विशेष श्रेणी के राज्यों में अधिक था। विशेष से भिन्न श्रेणी के राज्यों में बिहार, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश और उड़ीसा - सभी की प्रति व्यक्ति आय राष्ट्रीय औसत से कम - ने विकास व्यय पर ध्यान केंद्रित किया क्योंकि उनका संबंधित डीई-जीएसडीपी अनुपात 2000-05 की तुलना में 2005-10 के दौरान बढ़ गया। इसके विपरीत, पंजाब, हरियाणा, गुजरात, गोआ, महाराष्ट्र और तमिलनाडु जैसे धनी राज्यों में डीई-जीएसडीपी अनुपात 1980 के दशक और 1990 के दशक की तुलना में कम हो गया। 2005-10 के दौरान राज्यों के कुल व्यय में विकास व्यय का हिस्सा 1980-85 की तुलना में काफी कम हो गया। किंतु, राज्य सरकारों के कुल व्यय में विकास व्यय का हिस्सा 2000-05 की तुलना में काफी अधिक था (विवरण 54)।

6.29 प्रति व्यक्ति विकास व्यय विशेष और विशेष से भिन्न श्रेणी के राज्यों के बीच विशेष प्रवृत्ति दर्शाता है। विशेष श्रेणी के राज्य प्रति व्यक्ति विकास व्यय पर अधिक व्यय करते हैं। विशेष और विशेष से भिन्न श्रेणी के राज्यों में प्रति व्यक्ति विकास व्यय में सीएआरजी के संदर्भ में कोई विशेष प्रवृत्ति नहीं देखी गई। विश्लेषण की अवधि के दौरान, राज्य सरकारों के प्रति व्यक्ति विकास व्यय में सीएआरजी मध्य प्रदेश, मिजोरम और नगालैंड को छोड़कर अन्य राज्यों में 10 प्रतिशत से अधिक पाया गया (विवरण 55)। राज्यों के बीच डीई-जीएसडीपी अनुपात और प्रति व्यक्ति विकास व्यय के बीच 0.50 का सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण रैंक सहसंबंध था जो यह दर्शाता है कि सामान्य रूप से उच्च डीई-जीएसडीपी अनुपात वाले राज्य प्रति व्यक्ति विकास व्यय के लिए भी अधिक आबंटन करते हैं।

सामाजिक क्षेत्र का व्यय

6.30 जीएसडीपी के प्रतिशत के रूप में सामाजिक क्षेत्र का व्यय विशेष से भिन्न श्रेणी के राज्यों की तुलना में विशेष श्रेणी के राज्यों में सामान्यत: अधिक पाया गया। जीएसडीपी के प्रतिशत के रूप में सामाजिक क्षेत्र के व्यय की राज्य-वार प्रवृत्ति से पता चलता है कि 1980 के दशक के उत्तरार्ध में सभी राज्य सरकारों ने सामाजिक क्षेत्र के विकास पर अपना व्यय बढ़ा दिया था। किंतु, 1990-2005 के दौरान अधिकतर राज्यों में एसएसई-जीएसडीपी अनुपात कम हो गया था (विवरण 56)। हाल के वर्षों में, राज्यों के बीच एसएसई-जीएसडीपी अनुपात में औसत वृद्धि 2000-05 की तुलना में सांख्यिकीय रूप से अधिक होने से यह कहा जा सकता है कि राज्य सरकारों ने सामाजिक क्षेत्र के व्यय पर अधिक ध्यान दिया है। अधिकांश राज्यों में, राज्य सरकारों के सामाजिक क्षेत्रों के प्रति व्यक्ति व्यय में 10 प्रतिशत से अधिक का सीएआरजी दर्ज हुआ (विवरण 57)। विकास व्यय के मामले में, एसएसई-जीएसडीपी अनुपात और सामाजिक क्षेत्रों के प्रति व्यक्ति व्यय के बीच रैंक सहसंबंध भी सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण था।

6.31 सार्वजनिक व्यय के हिस्से की प्रवृत्ति का पता चलने पर इस बात की जांच करना बहुत महत्वपूर्ण हो जाता है कि राज्यों ने उन्होंने अपने सार्वजनिक व्यय का कार्यकारी वितरण ठीक किया है या नहीं। व्यय की संरचना की जांच से पता चलता है कि राज्यों के बीच मुख्य विकास व्यय में अभिसरण (कन्वर्जन्स)है (बॉक्स VI.19 और चार्ट क से च)।

बॉक्स VI.1: राज्यों में व्यय की मुख्य श्रेणियों की संरचना में अभिसरण (कन्वर्जन्स)

साहित्य में अभिसरण की अनेक परिभाषाएं मिलती है; अभिसरण के दो संकेतक हैं जिनका व्यापक प्रयोग हुआ है: बी अभिसरण और ए अभिसरण (बारो और साला-आइ-मार्टिन, 1992)। इनमें से पहला तब होता है जब यह पाया जाता है कि जब किसी अंतर-समुदायों के समूह (इस मामले में राज्य) कम औसत (परिवर्तनीय) के साथ नमूना अवधि की शुरुआत करते हैं और वह अधिक औसत स्तरों से शुरुआत करने वाले अंतर-समुदायों के अन्य समूहों की तुलना में अधिक तेजी से बढ़ते हैं, जबकि इनमें से दूसरा तब पाया जाता है जब समय अंतराल में स्तरों के फैलाव में कमी आती है।

व्यय की मुख्य श्रेणियों के अभिसरण की जांच की दृष्टि से, निम्नलिखित समीकरण के अनुमान से बी अभिसरण की जांच के लिए 1980-81 से 2008-09 की अवधि (आरई) को कवर करते हुए प्रयास किए गए:

$$\ln(E_{it}/E_{i0}) = \alpha + \delta^{*} \ln E_{i0} + u_{it}$$

δ का ऋणात्मक मूल्य बिटा (beta) अभिसरण दर्शाता है और अभिसरण दर β बी की गणना निम्नलिखित सूत्र का प्रयोग करके की जा सकती है:

$$\beta = -[\ln(1-\delta)]/T$$

E राज्य के प्रति व्यक्ति व्यय का स्तर दर्शाता है जबकि O और T क्रमशः प्रारंभिक और अंतिम वर्षों को दशार्ते हैं तथा u_{it} चूक का संदर्भ है।

उक्त समीकरण का अनुमान व्यय की मुख्य श्रेणियों, अर्थात राजस्व व्यय, पूंजी परिव्यय, विकास व्यय और सामाजिक क्षेत्र के व्यय के लिए लगाया जाता है।

सारणी 1: राज्यों में प्रति व्यक्ति व्यय के स्तरों के लिए बीटा अभिसरण का प्रतिगमन

	सीओ	डीई	एसएसई	ईडी	एचई	आरडी
α	4.6	7.1	7.3	6.2	4.3	3.3
$\ln E_{i0}$	-0.35**	-0.70*	-0.78*	-0.74*	-0.56*	-0.30
Adj. R^2	0.16	0.47	0.51	0.31	0.33	0.08
β	-0.010	-0.018	-0.020	-0.019	-0.015	-0.009

(*) और (**) क्रमशः 1% और 5% पर महत्व दर्शाते हैं।

सीओ: पूंजी परिव्यय — डीई: विकास व्यय

एसएसई: सामाजिक क्षेत्र का व्यय — ईडी: शिक्षा व्यय

एचई: आवास व्यय — आरडी: ग्रामीण विकास व्यय

सारणी 1 से यह देखा जा सकता है कि बिटा अभिसरण के लिए जांचे गए सभी समीकरणों में ए का सहगुणक ऋणात्मक है। यह अनुमान लगाया जा सकता है कि प्रति व्यक्ति पूंजी परिव्यय, विकास व्यय और सामाजिक क्षेत्र के व्यय ने राज्यों के बीच कुछ अभिसरण दर्शाया है क्योंकि उनके ए का संबंधित सहगुणक ऋणात्मक और सांख्यिकी रूप से महत्वपूर्ण है। किंतु, सामाजिक क्षेत्र के व्यय के भीतर, ग्रामीण विकास पर प्रति व्यक्ति व्यय के लिए जांचे गए समीकरणों में ए का सहगुणक ऋणात्मक है किंतु सांख्यिकी रूप से महत्वपूर्ण नहीं है जो यह दर्शाता है कि अभिसरण को सांख्यिकी विश्वास का समर्थन नहीं है। सामाजिक क्षेत्र के व्यय की अन्य श्रेणियों अर्थात, (i) स्वास्थ्य; और (ii)शिक्षा, खेल, कला और संस्कृति पर राज्यों के प्रति व्यक्ति व्यय में राज्यों में काफी अभिसरण देखा गया। व्यापक व्यय की श्रेणियों के बीच, बिटा द्वारा दर्शाए गए अभिसरण की दर से पता चलता है कि प्रति व्यक्ति सामाजिक क्षेत्र के व्यय की दर 1980-81 और 2008-09 के दौरान राज्यों में उच्चतम थी जिसके बाद प्रति व्यक्ति विकास व्यय का स्थान था। ये प्रायोगिक निष्कर्ष प्रत्येक राज्य के जनसंख्या हिस्से से भारांकित किए गए अंतर के भारांकित सहगुणक (डब्ल्यूसीवी) द्वारा दर्शाई गई प्रवृत्ति का समर्थन करते हैं जिससे चुनिंदा श्रेणियों के प्रति व्यक्ति व्यय में फैलाव की मात्रा में बदलाव का पता चलता है। अंतर के भारांकित सहगुणक की गणना निम्नवत की जाती है:

$$CV_{w} = \frac{1}{\bar{E}} \sqrt{\sum \frac{(E_i - \bar{E})^{2} * \frac{P_i}{P}}{N}}$$

यहां E प्रति व्यक्ति के संदर्भ में संबंधित व्यय की श्रेणी है, Pi/P कुल जनसंख्या में राज्य का हिस्सा है और N राज्यों की संख्या है।

चार्टों का पैनल दर्शाता है कि 1980-2009 के दौरान 22 राज्यों में व्यय की व्यापक श्रेणियों, नामतः, पूंजी परिव्यय, विकास व्यय और सामाजिक क्षेत्र के व्यय के डब्ल्यूसीवी (प्रति व्यक्ति संदर्भ में) में गिरावट की प्रवृत्ति देखी जा सकती है। सामाजिक क्षेत्र के व्यय के भीतर, डब्ल्यूसीवी में गिरावट की प्रवृत्ति प्रति व्यक्ति स्वास्थ्य व्यय में देखी गई थी। किंतु, राज्यों में प्रति व्यक्ति ग्रामीण विकास व्यय में 1980-2009 के दौरान कोई अभिसरण नहीं देखा गया जैसा कि बिटा अभिसरण विश्लेषण में देखा गया था। जहां बिटा अभिसरण विश्लेषण ने राज्यों में प्रति व्यक्ति शिक्षा व्यय में बढ़ते अभिसरण का समर्थन किया, वहीं डब्ल्यूसीवी की प्रवृत्ति इस निष्कर्ष का समर्थन नहीं करती (चार्ट क से च)।

जहां तक जीएसडीपी वृद्धि पर व्यय की प्रमुख श्रेणियों के प्रभाव का संबंध है, पूल्ड लिस्ट स्क्वेयर पद्धति पर आधारित प्रयोग से पता चलता है कि पूंजी परिव्यय-जीएसडीपी अनुपात में प्रतिशत वृद्धि से अनुवर्ती वर्ष में 0.2 प्रतिशतता अंक का प्रभाव पड़ता है। किंतु, जीएसडीपी वृद्धि पर एक वर्ष के अंतराल से विकास व्यय और सामाजिक क्षेत्र के व्यय का प्रभाव पूंजी परिव्यय की तुलना में कम होता है जिसका कारण यह हो सकता है कि यह राजस्व व्यय घटकों से प्रभावित होता है (सारणी 2)। यह पाया गया कि राज्यों की जीएसडीपी वृद्धि पर पूंजी परिव्यय और विकास व्यय का प्रभाव सांख्यिकी रूप से महत्वपूर्ण होता है।

सारणी 2: जीएसडीपी वृद्धि पर प्रभाव: पूल्ड लीस्ट स्क्वेयर

व्यय श्रेणी	सी	सहगुणक	टी-सांख्यिकी
सीओ-जीएसडीपी	9.4	0.2	3.4
डीई-जीएसडीपी (-1)	8.4	0.1	4.5
एसएसई-जीएसडीपी (-1)	9.6	0.1	1.3

जारी...

समाप्त

चार्ट VI.16 (क): राज्यों में प्रति व्यक्ति पूंजी परिव्यय के अंतर का भारांकित सहगुणक

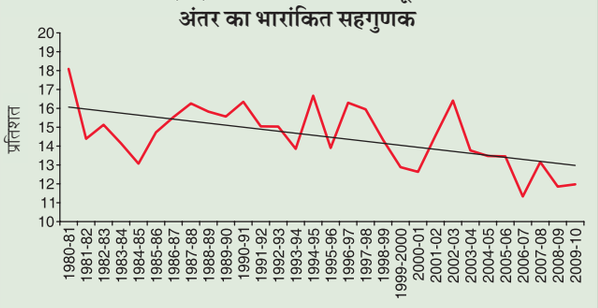

चार्ट VI.16 (ख): राज्यों में प्रति व्यक्ति विकास व्यय के अंतर का भारांकित सहगुणक

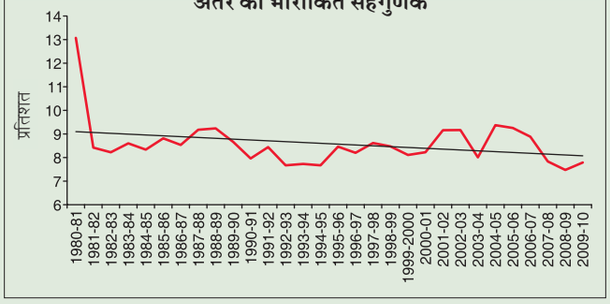

चार्ट VI.16 (ग): सामाजिक क्षेत्र का व्यय: राज्यों में अंतर का भारांकित सहगुणक

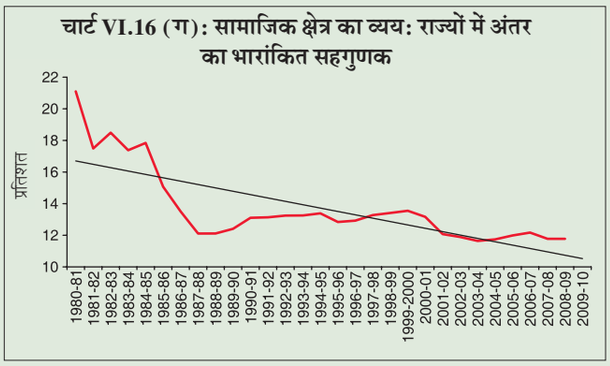

चार्ट VI.16 (घ): स्वास्थ्य पर प्रति व्यक्ति व्यय के अंतर का भारांकित सहगुणक

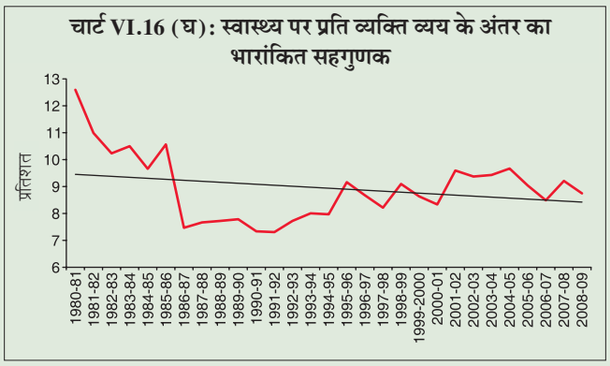

चार्ट VI.16 (ङ): ग्रामीण विकास पर प्रति व्यक्ति व्यय में अंतर का भारांकित सहगुणक

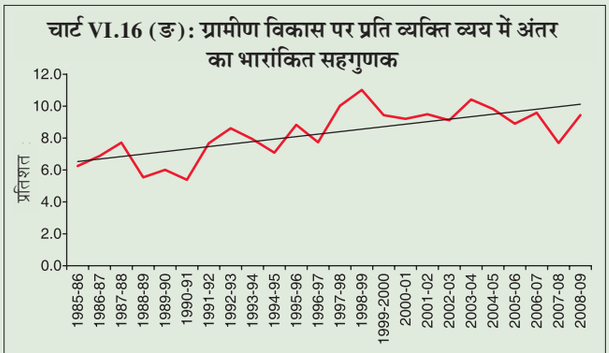

चार्ट VI.16 (च): शिक्षा पर प्रति व्यक्ति व्यय में अंतर का भारांकित सहगुणक

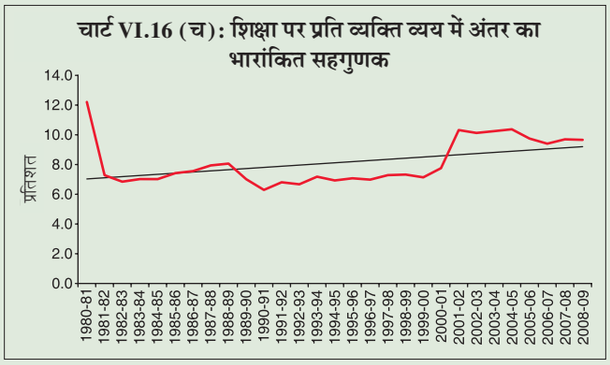

6. निष्कर्ष

6.32 प्रवृत्ति विश्लेषण दर्शाता है कि जीडीपी के हिस्से के रूप में राज्य सरकारों का कुल व्यय 1980 के दशक के दौरान बढ़ा किंतु 1990 के दशक के दौरान कम हो गया। जीडीपी के प्रतिशत के रूप में कुल व्यय 2000-2005 के दौरान बढ़ा। किंतु, 2005-10 के दौरान राज्य सरकारों के व्यय में गिरावट देखी जा सकती है जिसका मुख्य कारण राजकोषीय दायित्व विधान (एफआरएल) की अवधि के दौरान राजस्व व्यय में कुछ युक्तीकरण होना था। यह इस बात से स्पष्ट हो जाता है कि आरई-जीडीपी अनुपात 2000-05 के 13.3 प्रतिशत से कम होकर 2005-10 के दौरान 12.4 प्रतिशत रह गया। इस विश्लेषण ने राज्यों में विकास व्यय के प्रमुख घटकों का अभिसरण दर्शाया।